अध्याय- द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 संबंधित शोध कार्यों का पुनरावलोकन

2.3 उपसंहार

अध्याय–2

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

सतत् मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधायक द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में, संबंधित समस्याओं पर पहले किए गए कार्य से बिना जोड़े, स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। किसी भी अनुसंधान अध्ययन की योजना में महत्वपूर्ण कदमों में एक कदम अनुसंधान जर्नलों (Journals), पुस्तकों, अनुसंधान विवेचना (dissertation), शोधलेख (Thesis), व अन्य सूचना स्त्रोतों की सावधानीपूर्वक समीक्षा है। किसी अच्छे नियोजित अनुसंधान अध्ययन से पहले संबंधित साहित्य की समीक्षा अतिआवश्यक है।

संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के कार्य

- ❖ यह अनुसंधान कार्य के लिए आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। प्रत्येक प्रत्यय और धारणा को स्पष्ट करता है।
- ❖ इसके द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समस्या क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति क्या है? कब, कहां किसने और कैसे अनुसंधान कार्य किया है? इसके ज्ञान द्वारा अपने अध्ययन की योजना बनाना सुविधाजनक हो जाता है।
- ❖ संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण अनुसंधान के लिए अपनायी जाने वाली विधि, प्रयोग के विश्लेषण के लिए प्रयोग आने वाली उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।
- ❖ यह इस तथ्य का भी आभास देता है कि लिया गया अनुसंधान कार्य किस सीमा तक सफल हो सकेगा और प्राप्त निष्कर्षों की उपयोगिता क्या होगी?

- ❖ इसका यह महत्वपूर्ण कार्य समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणा बनाना, समस्या के सीमांकन और परिकल्पना के निर्माण में सहायता करना है।

2.2 संबंधित शोध कार्यों का पुनरावलोकन

स्टेलजर (1960) के शोध के अनुसार विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में पर्यावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यदि पर्यावरण अनुकूल हो तो शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च कोटि की होती है। यदि पर्यावरण प्रतिकूल हो तो शैक्षिक उपलब्धि पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

अनुराधा (1978) ने अपने अध्ययन ''पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता'' भोपाल के शासकीय एवं निजी विद्यालयों के छात्रों में अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होंने निम्न निष्कर्ष निकाले।

- ❖ कक्षा 9वीं के विद्यार्थी प्रदूषण से पर्यावरण में होने वाले नुकसान के बारे में जानते है फिर भी उन्हें पर्यावरण एवं प्रदूषण जैसे पारिभाषिक शब्दों को समझाने हेतु निर्देशों की आवश्यकता है।
- ❖ छात्र व छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता के प्रति कोई अंतर नहीं है।
- ❖ निजी विद्यालयों के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता की दक्षता शासकीय विद्यालय के छात्रों से अधिक है।
- ❖ विभिन्न जागरूकता स्तर वाले विद्यार्थियों के प्रदूषण की छवि पर प्राथमिक एवं अंतिम टेस्ट में कोई अंतर नहीं है।

हाझबेल (1980) ने कक्षा पर्यावरण तथा विद्यार्थियों के प्रदर्शन में संबंध ज्ञात किया। इस अध्ययन के अनुसार कक्षा पर्यावरण तथा विद्यार्थियों के प्रदर्शन में धनात्मक सह संबंध होता है।

राजपूत व उनके साथियों ने (1980) में भोपाल शहर के शासकीय प्राथमिक विद्यालय के कक्षा 3 एवं 4 के लिए 'पर्यावरण प्रोजेक्ट' आयोजित कराया जिसमें उन्होंने पाया कि विज्ञान के द्वारा बच्चों में पर्यावरण जागरूकता पैदा की जा सकती है। इन्होंने सन् 1985 में एक दूसरा अध्ययन किया जो प्रथम का पूरक था। इसमें उन्होंने पाया कि विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान पर्यावरण जागरूकता पैदा करने में सहायक है। इसमें उन्होंने 14 नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह में अध्ययन किया। पर्यावरण जागरूकता के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षा के बाद उन्होंने पाया कि प्रायोगिक एवं नियंत्रितसमूह के 9 युगल में कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि अन्य पांच में अंतर था जिनको पर्यावरण शिक्षा के द्वारा पढ़ाया गया था।

पर्यावरण शिक्षा हेतु मिट्टयूस्किन (1980) ने दो स्तरों का निर्धारण किया।

(i) शिक्षण संस्थानों के द्वारा पर्यावरण शिक्षा।

(ii) शिक्षण संस्थानों के बाहर पर्यावरण शिक्षा।

प्रथम स्तर पर पर्यावरण का कार्यक्रम किण्डर गार्टन, प्राथमिक, माध्यमिक द्वारा प्रदान किया जायें तथा द्वितीय स्तर पर परिवार, अवकाश शिविरों, पर्यटन, सांस्कृतिक आयोजनों, सार्वजनिक क्रियाओं, राजनैतिक संगठनों, समाचार पत्रों, आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र आदि द्वारा प्रदान किया जा सकता है।

शर्मा (1981) ने स्कूली एवं महाविद्यालय के छात्रों एवं सामान्य जनता में उनके अनुसार ही पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया। इसके आधार पर निष्कर्ष निकाला कि यदि माता-पिता द्वारा 12 वर्ष से कम के बच्चों को पर्यावरण शिक्षा दी जाती है तो वह अधिक स्थायी होती है। साथ ही माता-पिता द्वारा दी गई नैतिक शिक्षा से बच्चे पशुओं एवं पेड़-पौधों के प्रति दयावान हो जाते है और उस समय युवा अवस्था में दी गई पर्यावरण शिक्षा अधिक प्रभावी होगी

यदि पर्यावरण शिक्षा का व्यावहारिक रूप में स्नातक स्तर पर अध्ययन कराया जाये। साथ ही यूथ क्लब की सहायता से पर्यावरण के विकास संबंधित क्षेत्र की शिक्षा दी जाए।

गुप्ता, ग्रेवाल एवं राजपूत (1981) ने अपने अध्ययन में बताया कि औपचारिक, अनौपचारिक, औपचारिकेत्तर ग्रामीण एवं शहरी स्कूल के 7–12 वर्ष के बच्चों में पर्यावरण जागरूकता के मुख्य आयामों के संबंध में निश्चित एवं समान छवि है। कुछ क्षेत्रों में इन तीनों समूहों में जागरूकता वस्तुतः अपर्याप्त है। यह वे आयाम थे जो छात्रों में विकसित नहीं किये गये है।

प्रहाराज बी (1991) ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की पर्यावरण संबंधित ज्ञान तथा अभिवृत्ति का अध्ययन किया। इसके अंतर्गत पुरी जिले के 416 सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक तथा 302 सेवाकालिन प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का चयन किया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला की सेवापूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की अपेक्षा सेवाकालिन प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का पर्यावरण संबंधित ज्ञान तथा अभिवृत्ति ज्यादा है।

शाहनवाज (1990) ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों और विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन किया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि पर्यावरण जागरूकता एवं अभिवृत्ति ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक व विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के अध्यापक व विद्यार्थियों में अधिक है।

विक्टोरिया मूवोंग (1987) – "माध्यमिक स्कूल के ग्रामीण छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, जागरूकता एवं दृष्टिकोण का अध्ययन करना।"

अध्ययन के उद्देश्य

(i) कक्षा 9, 10 एवं 11वीं के ग्रामीण माध्यमिक स्कूल के छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण का पता लगाना।

(ii) कक्षा 9, 10 एवं 11वीं के ग्रामीण माध्यमिक स्कूल के छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण के अंतर का पता लगाना।

(iii) ग्रामीण माध्यमिक स्कूल के छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण के संबंध का पता लगाना।

मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों से 146 ग्रामीण छात्र एवं 34 ग्रामीण छात्राओं के प्रदत्तों को लिया गया। स्वयं निर्मित पर्यावरणीय जागरूकता दृष्टिकोण मापनी एवं खुली प्रश्नावली का उपयोग किया। समंको को संग्रहित करने के लिए किया गया। संग्रहित समंकों पर मध्यमान, सहसंबंध, मानक विचलन, t मान का उपयोग किया गया।

अध्ययन के निष्कर्ष

(i) हर स्तर एवं समूह के अध्ययन के दौरान माध्यमिक ग्रामीण छात्र का पर्यावरणीय ज्ञान, माध्यमिक ग्रामीण छात्राओं के पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर से अधिक पाया गया।

(ii) पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर माध्यमिक ग्रामीण विद्यार्थियों में अधिक पाया गया।

(iii) पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर माध्यमिक ग्रामीण छात्रों में माध्यमिक ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया।

(iv) ग्रामीण छात्रों में पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय दृष्टिकोण एवं पर्यारवणीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

गोपाल कृष्णन (1992) ने एक अध्ययन में कक्षा पांच के छात्रों को पर्यावरण शिक्षा प्रदान की तथा उन पर पर्यावरणीय शिक्षा

परीक्षण के प्रशासन के फलस्वरूप पाया कि पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य बालक–बालिकाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा समझबूझ उत्पन्न करना है। पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने से छात्रों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इस आशय हेतु बच्चों के निकटतम एवं दूरस्थ परिवेश/ पर्यावरण के अनुभवों पर आधारित गणवेशनात्मक एवं खोजपूर्ण किया–कलापों की सुनियोजित परिकल्पना एवं आयोजन आवश्यक है।

पटेल और पटेल (1994) ने प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता का क्षेत्र, शैक्षिक अनुभव तथा लिंग के आधार पर अध्ययन किया।

उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण क्षेत्र के कम अनुभव प्राप्त शिक्षिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के ज्यादा अनुभव प्राप्त शिक्षक पर्यावरण से अधिक जागरूक है।

भट्टाचार्य जी.सी. (1996) ने वाराणसी में प्राथमिक स्तर की छात्राओं एवं उनके माता–पिता की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया, उनके संशोधन कार्य के निम्नानुसार उद्देश्य थे :–

(i) वाराणसी के प्राथमिक स्कूल में तीसरी एवं पांचवी कक्षा में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता का अंतर उनके दृष्टिकोण एवं पर्यावरण संबंधी जिम्मेदारी के क्षेत्र में पता लगाना।

(ii) वाराणसी के कक्षा तीसरी एवं पांचवी की छात्राओं एवं माता–पिता के पर्यावरण जागरूकता का स्तर पता लगाना।

(iii) अध्ययन के लिए वाराणसी से तीसरी कक्षा के 290 विद्यार्थी एवं पांचवी कक्षा के 180 विद्यार्थियों व उनके 290 माता–पिता प्रदत्तों के रूप में चयनित किये गये। यह संबंध गुणांक एवं t मान द्वारा संग्रहित समंकों को विश्लेषित किया गया। अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये –

(I) पर्यावरण जागरूकता के संदर्भ में कक्षा तीसरी एवं पांचवी के छात्रों में कोई भी भेद नहीं पाया गया।

(II) दृष्टिकोण एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारी के संदर्भ में कक्षा तीसरी एवं पांचवी की कक्षाओं में कोई संबंधित अंतर नहीं पाया गया।

(III) कक्षा तीसरी एवं कक्षा पांचवी के विद्यार्थियों एवं उनके माता–पिता के पर्यावरण जागरूकता के संदर्भ में सह–संबंध गुणांक पाया गया है।

प्रजापत (1996) "कक्षा चौथी में पर्यावरणीय जागरूकता विकास के कार्यक्रम के परिणाम का अध्ययन"

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य

(i) कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण संबंधी जागरूकता कार्यक्रम का निर्माण करना।

(ii) कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण संबंधी जागरूकता का निर्माण करना।

(iii) कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण संबंधी जागरूकता में बुद्धिलब्धि के परिणाम का अध्ययन करना।

(iv) कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण संबंधी जागरूकता में लिंग के परिणामों का अध्ययन करना।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

(i) कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता को बढ़ाने में पूर्व संपादित प्रांरभिक पर्यावरणीय जागरूकता का मुख्य कार्य रहता है।

(ii) कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता के विकास में पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ाने वाले कार्यक्रम में सफलता मिलती है।

(iii) कक्षा चार के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता में बुद्धिलब्धि एवं लिंग का सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

पुस्तक से शिक्षा ग्रहण करने के अलावा छात्र कार्यक्रम द्वारा शिक्षा ग्रहण करने में ज्यादा उत्साहित एवं प्रेरित दिखाई दिये।

पटेल (1999) गुजरात राज्य के दांग जिले के प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया। इसके निष्कर्ष निम्नलिखित है –

(i) शिक्षिकाओं की अपेक्षा शिक्षकों के पर्यावरण जागरूकता का स्तर अधिक है।

(ii) पांच साल का अनुभव प्राप्त अध्यापकों की अपेक्षा पांच साल से ज्यादा अनुभव प्राप्त अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता अधिक है।

प्रधान (2002) ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित है –

(i) सामाजिक विज्ञान, भाषा तथा विज्ञान विषय शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर है।

(ii) विज्ञान शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता सामाजिक विज्ञान तथा भाषा शिक्षकों से अधिक है।

(iii) सामाजिक विज्ञान तथा भाषा शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

(iv) शहरी क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक पर्यावरण तथा पर्यावरण समस्या से ज्यादा जागरूक है।

(v) शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

(vi) माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की पर्यावरण जागरूकता समान है।

2.3 उपसंहार

प्रांरभिक स्तर पर विद्यार्थियों को विषयों का समन्वय करके पढ़ाना सुग्राही रहता है। प्रांरभिक स्तर पर पर्यावरण के बारे में समुचित ज्ञान प्राप्त होने पर वे पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते है। पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा उचित जीवन मूल्यों का विकास होता है। विद्यार्थी अपने कियाकलापों द्वारा वातावरण के प्रति उचित आचरण का परिचय दें तभी पर्यावरणीय शिक्षा सार्थक है।

उपरोक्त अध्ययनों का अध्ययन करने से पता चलता है कि पर्यावरण जागरूकता एवं पर्यावरणीय ज्ञान एवं पर्यावरणीय अभिवृत्ति पर पृथक-पृथक रूप से कार्य हुऐ है। पर्यावरणीय ज्ञान एवं पर्यावरणीय जागरूकता का सम्मिलित स्वरूप, पर्यावरणीय साक्षरता के अध्ययन क्षेत्र में अधिक शोध कार्य नहीं हुये है। प्रांरभिक स्तर पर विद्यार्थियों की पर्यावरणीय साक्षरता एवं पर्यावरणीय आचरण से संबंधित अध्ययन किसी शोधकर्ता द्वारा व्यापक पैमाने पर न होने के कारण इस तरह के शोध की आवश्यकता महसूस होती है।